Vo ghar hi hota hai, Saheb [Hindi]

Mohd. Umair Qureshi

4th semester Medical Student, Dr Baba Saheb Ambedkar Medical College
Corresponding Author:
Mohd. Umair Qureshi
Dr BSA Medical College
Rohini, Delhi, 110085, India
Email: mdumairqureshikht at gmail dot com

Received: 13-APR-2020 Accepted: 15-APR-2020 Published Online: 15-APR-2020

वो घर ही होता है, साहब
जो कानपुर से दिल्ली, दिल्ली से कानपुर
पैदल भी चलवाता है
वो घर ही होता है

जो हजारों मीलों की दूरी तय कराता है
और पुलिस की लाठियों से भी पिटवाता है
वो घर ही होता है

चलो आप कहते हो घर में रहो
माना बहुत अच्छी सोच है
पर मेरा तो कोई घर ही नहीं है
जिस की बिल्डिंग बनती है
उसी सड़क किनारे मेरा भी छोटा सा आशियाना बन जाता है
इन बिल्डिंग को वही मजदूर बनाते हैं
जो बाद में दर दर की ठोकरें खाते हैं
वो घर ही होता है

तुम कहते हो की वक्त बुरा है
क्या उस गरीब के घर चूल्हा जला है
जो सुबह कमाता है और शाम को खाता है ?
अपनी रोटियों में से कुछ रोटी गरीब के नाम करनी है
इस वक्त देश पर छोटी सी मेहरबानी करनी है
देश नफरतों में झुलस रहा है
गरीब का पेट भूख से सुलग रहा है

Cite this article as: Qureshi MU. Vo ghar hi hota hai, Saheb [Hindi]. RHiME. 2020;7:37-8.

मैंने पिंजरे में कैद परिंदे से पूछा
तुम्हें पिंजरे में रहना कैसा सुहाता है ?
वो रोकर बोला खाना–पानी वक्त पर मिल जाता है
पर मुझे रिहा कर दो और मेरे आशियाने में जाने दो
मेरे बच्चे मेरा इन्तजार करते होंगे
घर घर ही होता है, साहब

डाक्टर, नर्स, और मेडिकल स्टाफ को बेइज़्ज़त नहीं करना है
पुलिस को, सिक्योरिटी गार्ड को भी सलाम करना है
ये लोग ही असली हीरो कहलाते हैं
जो अपनी जान पर लडकर हमें खतरों से बचा पाते हैं

वो घर ही होता है, साहब
जो हमें कोविड19 से भी बचाता है
वो घर ही होता है!!

Acknowledgment: This poem was one of the submissions to "Lockdown Diaries: The COVID Contract" hosted online by Parwaaz, the poetry society of University College of Medical Sciences, University of Delhi, in April 2020